Pratham Education Foundation
Delhi Office : B-4/59, 2nd Floor, Safdarjung Enclave, New Delhi-110029
Phone Number : +91-11-41651638

Annual Status of Education Report
असर ASER 2024 RURAL
Facilitated by PRATHAM

तत्काल जारी

नई दिल्ली, 28 जनवरी, 2025

एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (असर) 2024 आज सुबह नई दिल्ली में प्रथम के सह-संस्थापक डॉ. माधव चव्हाण और सुश्री फरीदा लाम्बे द्वारा जारी की गई। यह चौदहवीं 'बेसिक' असर रिपोर्ट है।

असर 'बेसिक' सर्वेक्षण 3 से 16 वर्ष के बच्चों की नामांकन स्थिति और 5 से 16 वर्ष के बच्चों के बुनियादी पढ़ने और गणित कौशल के बारे में जिला, राज्य और राष्ट्रिय स्तर पर अनुमानित आंकड़े प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, असर 2024 में, आयुवर्ग 14 से 16 के बड़े बच्चों से उनकी डिजिटल पहुंच और उपयोग के बारे में सवाल पूछे गए और उनकी डिजिटल क्षमताओं का आंकलन करने के लिए उन्हें स्मार्टफोन आधारित कार्य भी दिए गए।

असर 2024 में, भारत के 605 ग्रामीण जिलों के 17,997 गांवों में 649,491 बच्चों तक पहुँचा । प्रथम की सहायता से, प्रत्येक सर्वेक्षणित जिले में, एक स्थानीय संगठन या संस्था ने सर्वेक्षण किया। असर 2024 सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्षों को तीन समूहों प्रस्तुत किया गया हैं: पूर्व प्राथमिक (आयुवर्ग 3-5), प्राथमिक (आयुवर्ग 6-14) और बड़े बच्चे (आयुवर्ग 15-16)।

ASER 2024: घरेलू सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष

पूर्व-प्राथमिक (आयु 3-5 वर्ष):

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की सार्वभौमिक प्रावधान की सिफारिश करता है। असर 2024 के आंकड़ों से पता चलता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों (ECCE, Centres)/पूर्व-प्राथमिक में नामांकन अधिक है और बढ़ रहा है। 2024 में, ग्रामीण भारत में 3-4 वर्ष की आयु के 80% से अधिक बच्चे किसी न किसी प्रकार के पूर्व-प्राथमिक संस्थान में नामांकित हैं (एकीकृत बाल विकास योजना केंद्रों सहित, ICDS Centres)।

- कक्षा I में प्रवेश करने वाले "कम उम्र" (आयु 5 और उससे कम) बच्चों का अनुपात घट रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा I में कम उम्र के बच्चों का प्रतिशत 2024 में 16.7% पर है, जो अब तक सबसे कम दिखाई दिया है।

प्राथमिक शिक्षा (आयु 6-14 वर्ष):

- 6-14 आयुवर्ग के बच्चों की विद्यालय में नामांकन दर 2022 से लगभग 98% पर थी जो वर्तमान में भी अधिक और स्थिर बनी हुई है।
- अधिकांश राज्यों में सभी कक्षाओ के बच्चों के बुनियादी पढ़ने और गणित दोनों स्तरों में सुधार हुआ है। यह बदलाव काफी हद तक सरकारी विद्यालयों में नामांकित बच्चों की सीखने की क्षमता में वृद्धि के कारण है। विद्यालय में प्रारंभिक कक्षा (कक्षा I-III) में नामांकित बच्चों में असर 2020 के आंकड़ों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।

बड़े बच्चे (आयु 15-16 वर्ष)

- हाल के वर्षों में विद्यालयों में नामांकित न होने वाले बड़े बच्चों (आयु 15-16 वर्ष) का अनुपात लगातार घट रहा है। आज इस आयुवर्ग के लगभग 7% (लड़के और लड़कियाँ) वर्तमान में विद्यालय में नामांकित नहीं हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर, 90% से अधिक ग्रामीण किशोरों (आयुवर्ग 15-16) के पास स्मार्टफोन की सुविधा है। इस आयुवर्ग के लगभग 70% किशोर बुनियादी डिजिटल कार्य कर सकते हैं जैसे अलार्म लगाना, इंटरनेट पर जानकारी ढूँढ़ना और विशिष्ट ऑनलाइन सामग्री ढूँढ़ना और दूसरों के साथ साझा करना है।

असर 2024: विद्यालय अवलोकन से मुख्य बिंदु:

2024 में, असर सर्वेक्षकों ने प्राथमिक कक्षाओ वाले 15,728 सरकारी विद्यालयों का भी दौरा किया।

- मध्याह्न भोजन, शौचालय, पेयजल और पुस्तकालय जैसी बुनियादी विद्यालय सुविधाओं का साल दर साल बेहतर हो रही है।
- निपुण भारत कार्यक्रम के अंतर्गत आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) कार्यक्रम और गतिविधिया अधिकांश विद्यालयों तक पहुँच गया है।

असर 2024 के प्रमुख निष्कर्षों के बारे में अधिक जानकारी निम्नलिखित पृष्ठों और असर 2024 रिपोर्ट में भी उपलब्ध है।

असर 2024 :मुख्य निष्कर्ष

घरेलू सर्वेक्षण से प्राप्त डाटा

पूर्व- प्राथमिक (आयु 3-5 वर्ष):

ECE केंद्रों/ पूर्व-प्राथमिक में नामांकन उच्च है और बढ़ रहा है ।
कक्षा I में प्रवेश करने वाले "कम उम्र" (आयु 5 और उससे कम) बच्चों का अनुपात घट रहा है।

- नामांकन: 2018 से आयुवर्ग 3-4 के छोटे बच्चों के नामांकन में लगातार वृद्धि हुई है। 2024 में, इस आयुवर्ग के 80% से अधिक बच्चे किसी न किसी प्रकार के पूर्व प्राथमिक संस्थान में नामांकित हैं।
- कक्षा I में प्रवेश की आयु: "कम उम्र" (आयु 5 या उससे कम) बच्चों का अनुपात समय के साथ घट रहा है। 2018 में, यह आँकड़ा 25.6% था, 2022 में यह 22.7% था, और 2024 में, राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा I में कम उम्र के बच्चों का प्रतिशत 16.7% पर यह अब तक सबसे कम है।

प्राथमिक शिक्षा (आयु 6-14 वर्ष)

प्राथमिक विद्यालय आयुवर्ग के बच्चों की कुल नामांकन दर 2022 से स्थिर बनी हुई है। सभी प्राथमिक कक्षाओं के लिए पढ़ने और गणित दोनों स्तरों में सुधार देखा गया है, जो सरकारी विद्यालयों में नामांकित बच्चों की सीखने की क्षमता में वृद्धि से प्रेरित है।

नामांकन

- वर्तमान में विद्यालय में नामांकित बच्चे (आयु 6-14 वर्ष): यह अनुपात लगभग 20 वर्षों से 95% से अधिक है। यह 2022 में 98% को पार कर गया और तब से स्थिर हो गया है, 2024 में 98.1% पर है।
- सरकारी विद्यालयों में नामांकन: कोविड महामारी के दौरान सरकारी विद्यालय नामांकन में बड़ी वृद्धि देखी गई (2022 में 72.9%) लेकिन 2024 में, राष्ट्रिय स्तर पर सरकारी विद्यालयों में नामांकन 66.8% है, जो कोविड महामारी से पहले के स्तर के करीब है।

पढ़ना- असर पढ़ने का यह आंकलन करता है कि क्या बच्चा अक्षर, शब्द, कक्षा I के स्तर का एक सरल का अनुच्छेद या कक्षा II के स्तर की कहानी पढ़ सकता है। चयनित घरों में यह कार्य आयुवर्ग 5-16 के प्रत्येक बच्चे को एक-एक करके दिए जाते हैं। बच्चे को उस उच्चतम स्तर पर चिह्नित किया जाता है जिस तक वह आराम से पढ़ सकता है। यह मूल्यांकन पद्धति 2006 से ही एक समान रही है, जिससे समय के साथ तुलना करना संभव हो पाया है।

राष्ट्रिय स्तर पर असर के आकड़े बताते हैं कि सभी प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1-8) में सरकारी विद्यालयों के बच्चों के पढ़ने के स्तर में सुधार हुआ है।

- **कक्षा III:** 2005 में असर सर्वेक्षण की शुरुआत के बाद से, पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर असर 2024 में सरकारी विद्यालयों में नामांकित कक्षा III के बच्चों के लिए बुनियादी पढ़ने का स्तर सबसे अधिक है । असर 2018 में, कक्षा 3 III के बच्चो का प्रतिशत जो कक्षा II स्तर का पाठ पढ़ने में सक्षम थे 20.9% था। यह आंकड़ा 2022 में गिरकर 16.3% हो गया, और 2024 में बढ़कर 23.4% हो गया। यह सुधार निजी विद्यालयों में नामांकित बच्चों के लिए "सीखने की पुनर्प्राप्ति" से अधिक है।

- **कक्षा V**: कक्षा V के बच्चों के बीच पढ़ने का स्तर पूर्व- कोविड महामारी के स्तर पर पहुंच गया, खासकर उनमें जो सरकारी विद्यालयों में नामांकित हैं। सरकारी विद्यालयों में कक्षा 5 के ऐसे बच्चों का अनुपात जो कक्षा II के स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, 2018 में 44.2% से गिरकर 2022 में 38.5% हो गया, और फिर 2024 में 44.8% हो गया।

- **कक्षा VIII**: राष्ट्रिय स्तर के आकड़े बताते हैं कि सरकारी विद्यालयों में कक्षा VIII में नामांकित बच्चों में पढ़ने का स्तर बढ़ा है। 2022 में यह अनुपात 66.2% था, और 2024 में 67.5% है।

गणित

असर गणित की जाँच में यह आकलन किया जाता हैं कि क्या बच्चा 1 से 9 तक अंकों को पहचान सकता है, 11 से 99 तक की

संख्याओं को पहचान सकता है, हासिल लेकर 2-अंक वाले घटाव के सवाल को हल कर सकता है, या भाग (3-अंकों का 1-अंक) को

सही तरीक से हल कर सकता है। चयनित घर में, यह जाँच 5-16 आयुवर्ग के प्रत्येक चयनित बच्चे को एक-एक करके दिए जाते हैं। बच्चे को उच्चतम स्तर पर चिह्नित किया जाता है जहां तक वह आसानी से कर सकता है। मूल्यांकन पद्धति 2006 से सामान बनी हुई है, जिससे कि समय के साथ तुलना करना संभव हो।

राष्ट्रीय स्तर पर, सरकारी और निजी दोनों विद्यालयों में बच्चों के बुनियादी गणित के स्तरों में भी सुधार देखा गया है, जो एक दशक के सबसे **उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है।**

- **कक्षा III:** कक्षा III के बच्चे जो कम से कम घटाव का सवाल हल कर सकते हैं, उनका राष्ट्रीय आंकड़ा 2018 में 28.2% और 2022 में 25.9% था। 2024 में यह आंकड़ा बढ़कर 33.7% हो गया है। सरकारी विद्यालय के छात्रों के बीच, यह आंकड़ा 2018 में 20.9% और 2022 में 20.2% हो गया, जो 2024 में बढ़कर 27.6% हो गया। निजी विद्यालय के छात्रों के लिए, इस संख्या में 2022 के बाद से थोड़ा सुधार हुआ है।

- **कक्षा V:** राष्ट्रिय स्तर पर, कक्षा V में उन बच्चों के अनुपात में भी सुधार हुआ है जो कम से कम भाग का सवाल हल कर सकते हैं। 2018 में यह आंकड़ा 27.9% था, 2022 में 25.6% और फिर 2024 में बढ़कर 30.7% हो गया है। यह बदलाव भी मुख्य रूप से सरकारी विद्यालयों में देखा गया है।
- **कक्षा VIII:** बुनियादी गणित में आठवीं कक्षा के छात्रों का प्रदर्शन पहले के समान बना हुआ है, जो 2018 में 44.1% से बढ़कर 2022 में 44.7% और 2024 में 45.8% हो गया है।

बड़े बच्चे (आयु वर्ग 15-16 वर्ष)

बड़े बच्चे (आयु 15-16 वर्ष) हाल के वर्षों में विद्यालय न जाने वाले बड़े बच्चों का अनुपात लगातार घट रहा है। बड़े बच्चों की स्मार्टफोन तकनीक तक पहुँच और उसका उपयोग करने की क्षमता काफी है, लेकिन उम्र और लिंग दोनों के आधार पर अंतर दिखाई देता है।

नामाँकन
- 15-16 वर्ष के बड़े बच्चे जो विद्यालय में नामांकित नहीं हैं, उनका अनुपात 2018 में 13.1% से तेजी से गिरकर 2022 में 7.5% हो गया, लेकिन राष्ट्रिय स्तर पर 2024 में लगभग 7.9% पर बना हुआ है ।

डिजिटल साक्षरता
देश भर में पहली बार असर के घरेलू सर्वेक्षण में डिजिटल साक्षरता पर एक अलग से भाग शामिल किया, जिसे 14-16 आयु वर्ग के बड़े बच्चों को दिया गया। इसमें स्मार्टफोन की पहुँच, स्वामित्व और उपयोग पर स्व-रिपोर्ट किए गए प्रश्न शामिल किये गए थे, साथ ही कुछ बुनियादी डिजिटल कौशल पर एक-एक करके बच्चों का मूल्यांकन भी किया गया था।

- **पहुँच:** आयुवर्ग 14-16 के बीच स्मार्टफोन तक पहुँच लगभग सार्वभौमिक है। लगभग 90% लड़कियों और लड़कों ने बताया कि उनके घर में स्मार्टफोन है। 80% से ज़्यादा लोगों ने बताया कि उन्हें स्मार्टफोन का प्रयोग करने आता है (लड़कियों के 79.4% की तुलना में लड़कों के 85.5%)। हालांकि, स्मार्टफोन स्वामित्व में लिंग के आधार पर बहुत बड़ा अंतर है: 36.2% लड़कों के पास अपना स्मार्टफोन है, जबकि 26.9% लड़कियों के पास अपना स्मार्टफोन है।

- **उपयोग:** आयुवर्ग 14-16 के सभी बच्चों में से 82.2% ने बताया कि वे स्मार्टफोन का उपयोग करना जानते हैं। इनमें से 57% ने बताया कि उन्होंने पिछले सप्ताह में शैक्षिक गतिविधियो के लिए स्मार्टफोन का उपयोग किया था, जबकि 76% ने कहा कि उन्होंने उसी अवधि के दौरान सोशल मीडिया के लिए इसका उपयोग किया था। सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाले बच्चों में ऑनलाइन खुद को सुरक्षित रखने के बुनियादी तरीकों के बारे में जानकारी अपेक्षाकृत अधिक थी। 62% जानते थे कि प्रोफ़ाइल को कैसे ब्लॉक या रिपोर्ट करना है, 55.2% जानते थे कि प्रोफ़ाइल को निजी कैसे बनाया जाए और 57.7% जानते थे कि पासवर्ड कैसे बदला जाए। इन सुरक्षा सुविधाओं के बारे में लड़कों की जागरूकता लड़कियों की तुलना में काफी अधिक थी।

- **डिजिटल कौशल:** सर्वेक्षण के दिन,70.2% लड़के और 62.2% लड़कियाँ डिजिटल कार्य करने के लिए स्मार्टफ़ोन (अपना,परिवार के किसी सदस्य का या पड़ोसी का) लाने में सक्षम थे। इन बच्चों को स्मार्टफ़ोन का उपयोग करके 3 कार्य करने के लिए कहा गया: जैसे कि अलार्म सेट करना, किसी विशेष जानकारी को ब्राउज़ करना और यूट्यूब वीडियो ढूँढ़ना आदि ।यदि वे यूट्यूब वीडियो ढूँढ़ने में सक्षम थे, तो उन्हें किसी भी मैसेजिंग प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से इसे किसी और के साथ साझा करने के लिए कहा गया।

    - ◊ जिन बच्चों को ये कार्य दिए गए थे, उनमें से तीन-चौथाई से ज़्यादा बच्चे इन्हें सफलतापूर्वक करने में सक्षम थे। जो लोग यूट्यूब पर वीडियो ढूँढ़ पाए, उनमें से 90% से ज़्यादा इसे शेयर करने में सक्षम थे।
    - ◊ हर कार्य के प्रदर्शन में उम्र और लिंग के आधार पर अंतर देखा गया। बड़े बच्चों ने बेहतर प्रदर्शन किया और लड़कियों की तुलना में लड़के ज़्यादा कुशल थे।

विद्यालय अवलोकन

असर सर्वेक्षण के इस भाग के रूप में, प्रत्येक चयनित गाँव के सरकारी प्राथमिक कक्षाओ वाले एक सरकारी विद्यालय का दौरा किया जाता है। यदि गाँव में एक से अधिक सरकारी विद्यालय हैं, तो प्राथमिक कक्षाओ में सबसे अधिक नामांकन वाले विद्यालय को चुना जाता है।

असर 2024 में, असर सर्वेक्षणकर्ताओं ने प्राथमिक कक्षाओ वाले 15,728 सरकारी विद्यालयों का दौरा किया। जिसमे 8,504 प्राथमिक विद्यालय तथा 7,224 ऐसे विद्यालय थे जिनमें उच्च प्राथमिक या उच्चतर कक्षाएँ भी थीं।

देश भर में आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन) से संबंधित गतिविधियों का रोलआउट दिखाई दे रही है। बुनियादी विद्यालय सुविधाओं के प्रावधान में सुधार जारी है।

- 80% से अधिक विद्यालयों को पिछले और वर्तमान शैक्षणिक वर्ष दोनों में कक्षा I-II/III के साथ एफ.एल.एन गतिविधियों को लागू करने के लिए सरकार से निर्देश प्राप्त हुआ था। इसी अनुपात में कम से कम एक शिक्षक को एफ.एल.एन पर व्यक्तिगत प्रशिक्षण मिला था।
- 75% से अधिक विद्यालयों को एफ.एल.एन गतिविधियों के लिए TLM और/या TLM बनाने या खरीदने के लिए धन प्राप्त हुआ।
- 75% से अधिक विद्यालयों ने पिछले और वर्तमान शैक्षणिक वर्ष दोनों में कक्षा I में प्रवेश करने से पहले छात्रों के लिए विद्यालय रेडीनेस कार्यक्रम लागू होने की सूचना दी।
- 95% से अधिक विद्यालयों ने विद्यालय में सभी कक्षाओ को पाठ्यपुस्तकें वितरित होने की सूचना दी, जो 2022 के स्तर की तुलना में अधिक है।
- राष्ट्रीय स्तर पर, असर में शामिल शिक्षा के अधिकार से संबंधित सभी संकेतकों ने 2018, 2022 और 2024 के बीच छोटे सुधार दिखाए हैं। इसमें अन्य संकेतकों के अलावा उपयोग योग्य बालिका शौचालयों वाले विद्यालयों का अनुपात, पीने का पानी उपलब्ध होना और छात्रों द्वारा पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों का उपयोग करने वाले विद्यालयों का अनुपात शामिल है।

For more information please contact.
Ranajit Bhattacharya
99711-37677